पाठ - 8

डॉ.अब्दुल कलाम के जीवन के प्रेरक प्रसंग

आइए सीखें - ■दृढ़ इच्छा-शक्ति और आत्म-विश्वास की भावना जगाना। ■महापुरुषों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होना। ■समास और कारक से परिचय।

भारत के दक्षिण में रामेश्वरम् जिले का नाम आज विख्यात है। इसी पुण्य-भूमि पर भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति महामहिम डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का जन्म हुआ। उनका पूरा नाम 'अबुल पकीर जैनुलाब्द्दीन अब्दुल कलाम' है। 15 अक्टूबर 1931 ई. (पन्द्रह अक्टूबर उन्नीस सौ इकतीस) को जन्मे अब्दुल कलाम का स्वभाव बचपन से ही अन्वेषक तथा शांतचित्त प्रवृत्ति का रहा है। उनका पूरा बचपन संघर्षों की कहानी है। दृढ़ इच्छा शक्ति और आत्मविश्वास उनकी सफलता के सोपान हैं। डॉ.अब्दुल कलाम का निधन 27 जुलाई 2015 में हुआ।

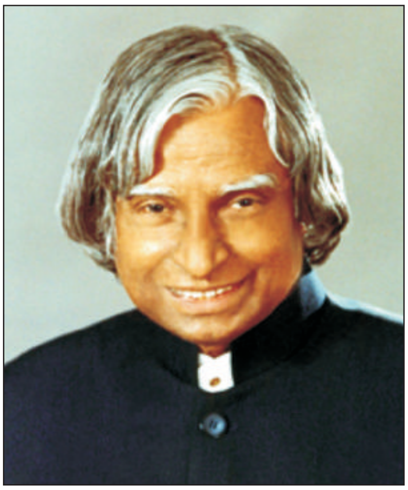

उनके जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग अत्यन्त प्रेरणादायक हैं।

बाल्यकाल और संघर्ष

अब्दुल कलाम बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि के थे। उनकी सामाजिक समरसता की चेतना रामेश्वरम् के सामाजिक परिवेश में पल्लवित हुई। वे अपने परिवेश से भी कुछ-न-कुछ ज्ञान की बातें ढूँढ़ निकालते थे। उन्होंने विद्यार्थी जीवन में अपने गुरु की डाँट-फटकार को बुरा नहीं माना, बल्कि उसे मार्गदर्शन समझकर कठिन परिश्रम किया और सबसे अधिक अंक अर्जित कर कीर्तिमान स्थापित किया।

रामनाथपुरम् में श्वाट्र्ज हाईस्कूल की दीवार पर एक पट्टिका थी जिस पर अंकित था - "अपना समय व्यर्थ न जाने दो। जो समय व्यतीत हो गया उसे स्वर्ण देकर भी वापिस नहीं खरीद सकते।" इस वाक्य के अर्थ को उन्होंने पूरी तरह अपने जीवन में उतारा और आगे चलकर विश्वविख्यात वैज्ञानिक बने। उनकी पढ़ाई में कई बार आर्थिक संकट आए, लेकिन उनकी लगन और योग्यता को देखकर परिजनों ने कठिन परिश्रम कर पढ़ाई को जारी रखा।

1950 ई. (उन्नीस सौ पचास) में बी.एससी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद आगे की पढ़ाई में फिर रुकावट आई। तब उन्होंने स्वयं कुछ करने की ठानी। वे ट्यूशन पढ़ाने लगे। मद्रास (चेन्नई) से छपने वाले एक समाचार पत्र 'हिन्दू' के लिए लेख भी लिखे। इससे उन्हें कुछ पारिश्रमिक भी प्राप्त हो जाता था, जिससे उन्होंने अपनी पढ़ाई को निरन्तर रखा। वे कभी असफलताओं से नहीं हारे। सतत् प्रयास और दृढ़ इच्छा शक्ति से उन्हें अन्त में सफलता ही मिली। उन्होंने 250 रु. (दो सौ पचास) प्रति माह के वेतन पर "वरिष्ठ सहायक वैज्ञानिक" के रूप में पहली नौकरी प्रारंभ की।

शिक्षण संकेत - ■बच्चों को विद्यालय में लिखी सूक्तियाँ बताइए, समझाइए। ■संदेशों का अर्थ बता कर उनको व्यवहार में लाने की प्रेरणा दीजिए।

मिसाइल मैन की आधारशिला

अब्दुल कलाम अपनी माँ से रामायण की कहानियाँ और हजरत मुहम्मद साहब के जीवन से सम्बान्धित कथाएँ सुनते थे। विद्यार्थी जीवन में वे रामलीला देखने भी जाया करते थे। उनकी अन्वेषक दृष्टि हर स्थान पर कुछ न कुछ खोजती रहती। एक बार की बात है, रामलीला चल रही थी। दृश्य था - राम-रावण युद्ध, जिसमें राम अग्निबाण से रावण की नाभि में स्थित अमृत को सुखाकर उसका अन्त कर देते हैं। अग्निबाण की इसी अवधारणा से ही अग्नि मिसाइल का सूत्रपात हुआ।

अब्दुल कलाम समाचार पत्र तो पढ़ते ही थे। पुराने समाचार पत्र भी कभी सामने आ जाते तो इनमें प्रकाशित लेख भी बड़े ध्यान से पढ़ते। इसी प्रकार एक बार एक लेख अंगरेजी समाचार-पत्र 'हिन्दू' में छपा था। लेख का नाम था ''साफ्टफायर'' इसका हिन्दी अर्थ हुआ 'मन्त्रबाण'। यह एक प्राचीन भारतीय अस्त्र का नाम है। जिसका प्रयोग द्वितीय विश्व युद्ध में हुआ था। इस मंत्रबाण ने उन्हें आगे चलकर 'अग्नि' मिसाइल बनाने के लिए प्रेरित किया। डॉ. अब्दुल कलाम और मिसाइल एक दूसरे के पूरक हो गए इसीलिए उन्हें मिसाइल मैन के नाम से भी जाना जाता है। डॉ.अब्दुल कलाम विश्व के दस मिसाइल वैज्ञानिकों में से एक हैं।

सामाजिक समरसता से सराबोर परिवार

डॉ.अब्दुल कलाम का पूरा परिवार सामाजिक समरसता से सराबोर रहा है। उनका परिवार हिन्दू-मान्यताओं के प्रति श्रद्धालु रहा है। रामेश्वरम् के प्रसिद्ध शिवमंदिर के प्रति गहरी आस्था-श्रद्धा उनके साम्प्रदायिक सद्भाव का उदाहरण है।

एक बार की घटना है। मन्दिर के पास गहरे जलाशय में एक शिवमूर्ति गिर गयी। तब प्रश्न उठा-गहरे जलाशय से शिवमूर्ति कैसे निकलेगी? इतनी गहराई से मूर्ति को बाहर कौन निकालेगा?

ऊहापोह की स्थिति में किसी का साहस जलाशय में घुसने का नहीं हुआ। तभी एक व्यक्ति ने झटपट जलाशय में डुबकी लगायी और थोड़ी ही देर में जल के ऊपर आ गया उसके दोनों हाथों में शिवमूर्ति थी। वह व्यक्ति अब्दुल कलाम परिवार के एक सदस्य थे।

रामेश्वरम् में प्रतिवर्ष आयोजित श्री सीता-राम विवाह समारोह में इनके परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

विवाह स्थल तक श्री राम की मूर्तियाँ ले जाने के लिए विशेष प्रकार की नौकाओं की व्यवस्था की जाती है। यह शुभ कार्य अब्दुल कलाम का परिवार ही करता है। विवाह स्थल 'रामतीर्थ' इनके घर के समीप ही है।

स्वदेश का मान

पढ़ाई समाप्त होने के बाद अब्दुल कलाम ने वैमानिकी यान्त्रिकी की शिक्षा प्राप्त की थी। इस शिक्षा के अन्तर्गत रॉकेट उपग्रह मिसाइल इत्यादि आते हैं। उन दिनों भारत में इस पढ़ाई का विशेष महत्व नहीं

था। ऐसे विद्यार्थियों की माँग उस समय यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में हो रही थी। इन देशों में अच्छा वेतन और भरपूर मान-सम्मान मिलता था।

तब अब्दुल कलाम के लिए दो रास्ते थे। पहला रास्ता था - आदर्श पर चलकर स्वदेश-सेवा की जाए। दूसरा रास्ता था - धन कमाने के लिए विदेश जाया जाए। सही रास्ते के चयन की समस्या को हल करने के विषय में स्वयं कलाम ने अपनी आत्मकथा ''माई जर्नी'' में लिखा है ''काफी कसमसाहट से भरे थे जीवन के वे दिन। एक ओर विदेशों में शानदार भविष्य था, दूसरी ओर था देश - सेवा का आदर्श। इन दोनों में से एक का मेरे लिए चुनाव करना कठिन था। अन्ततः मैंने तय किया - पैसों के लिए विदेश नहीं जाऊँगा। भविष्य सँवारने के मोह में देश-सेवा का अवसर हाथ से जाने नहीं दूँगा।

सहृदयी, अब्दुल कलाम

बहुत कम लोग जानते हैं कि वैज्ञानिक अब्दुल कलाम कितने सरल हैं। वे कविताएँ रचते हैं और यथा अवसर अपने सहभागियों को सुनाते भी हैं। अग्नि के सफल प्रक्षेपण के बाद ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के स्वर मुखरित होकर कविता बन गए।

मत तलाश करो अग्नि में
शत्रु को भयाक्रान्त करता
शक्ति का प्राची कोई,
यह तो है एक अग्नि,
हृदय में धधकती।
हर भारतवासी के
सभ्यता उद्गामिनी-सी
भारत की गरिमा की संबंध
आभा से कान्तिमान्
एक लघु प्रतिमा है यह!

इस प्रकार उन्होंने कई प्रसंगो में उद्दीप्त होकर कविताएँ रचीं, जो उनकी रचनाधर्मिता का प्रतीक है।

वे अपने वैज्ञानिक जीवन में कल्पनाओं और योजनाओं पर 18 (अठारह) घंटे काम करते थे। प्रतिदिन की यही दिनचर्या थी। फुरसत के क्षणों में वे 'रुद्रवीणा' बजाते हैं। कभी वे शास्त्रीय संगीत के सुरों में डूब जाते हैं।

शिक्षण संकेत - ■साम्प्रदायिक सद्भाव का सामाजिक महत्व बतलाते हुए अन्य प्रसंगों को कक्षा में सुनाइए। ■स्वदेश की भावना और देश प्रेम के प्रति कोई कविता आदि सुनाकर प्रेरित कीजिए।

बच्चों के मित्र

डॉ.अब्दुल कलाम को बच्चों के साथ बात करने में आनन्द आता है। उनके अनुसार बच्चों में ही सम्पूर्ण राष्ट्र का विकास छिपा होता है। उनसे मित्र की तरह बात करने से वे सीखते हैं, वे जहाँ-जहाँ भी जाते हैं, विद्यालय के बच्चों के बीच जाकर उनसे बातें अवश्य करते हैं। डा.अब्दुल कलाम गुरु-शिष्य परम्परा के समर्थक हैं। उनके विद्यार्थी-जीवन में सफलताओं के लिए कई शिक्षकों का योगदान रहा। उनके आदर्श शिक्षक 'अयादुरै सोलोमन' के तीन प्रमुख बिन्दुओं - इच्छा, आस्था और आशा को अब्दुल कलाम ने पूरी निष्ठा से अपनाया।

डॉ. कलाम के अन्य प्रेरक विचार

1. विज्ञान वैदिक साहित्य की तरह है- सरस और संवेदनशील।
2. मुझे भारतीय होने का गर्व है- यह एक महान् देश है।
3. हमारे युवकों को सपने देखने ही चाहिए। सपनों को विचारों में बदलना चाहिए। विचारों को क्रिया के जरिए वास्तविकता में बदलना चाहिए।
4. वह काम करो, जिसमें तुम्हारी आस्था हो। यदि ऐसा नहीं करते हो, तो तुम अपनी किस्मत दूसरों के हवाले कर रहे हो।
5. जो लोग अपने व्यवसाय में शीर्ष पर पहुँचना चाहते हैं, उनके भीतर पूर्ण वचनबद्धता का मूल गुण होना अत्यन्त आवश्यक है।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

अन्वेषक	-	सोपान	-	परिणित	-	सृजन	-
आर्थिक	-	परिवेश	-	ऊहापोह	-	आस्था	-
सराबोर	-	अस्त्र	-	यथाअवसर	-	सहभागी	-
मुखरित	-	आभा	-	क्रांतिमान	-	प्रतिमा	-
प्रतिबिम्ब	-						

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

(क) अब्दुल कलाम का पूरा नाम क्या है?

(ख) कलाम ने अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए क्या संघर्ष किया।

(ग) रामलीला में अब्दुल कलाम ने क्या देखा? और उस दृश्य का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

(घ) डॉ.अब्दुल कलाम बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं?

(ङ) अब्दुल कलाम को ''मिसाइल मैन'' बनने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

2. डॉ. कलाम के प्रेरक विचार बिन्दु लिखिए।

भाषा अध्ययन

1. 'परिवेश' में 'परि' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। नीचे दिए शब्दों में से मूल शब्द और उपसर्ग अलग करके लिखिए -

परिश्रम, परिहास, परिचर्चा, परिभ्रमण, परिधान, परिजन, परिपूर्ण।

2. निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए -

सामाजिक, वैज्ञानिक, वैमानिक, यांत्रिक, वैदिक, पारिश्रमिक, आर्थिक

3. <u>पल्लवित</u> शब्द में 'पल्लव' के साथ 'इत' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। इसी तरह के अन्य शब्द बनाइए।

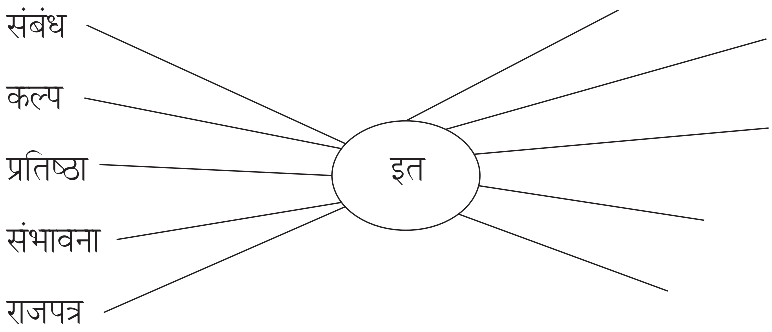

समझिए -

द्वन्द्व समास - इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पदों के बीच **<u>और</u>** शब्द का लोप होता है। जैसे - रात-दिन (रात और दिन), भला-बुरा (भला और बुरा)।

कर्मधारय समास - इसमें एक पद विशेषण और एक पद विशेष्य होता है। जैसे - खलजन, कमलनयन, खलजन में जन विशेष्य है और खल विशेषण है।

4. नीचे कुछ सामासिक पद दिए गए हैं। उन्हें छाँटकर तालिका में भरें-

शब्द	तत्पुरुष	द्वन्द्व	कर्मधारय
अग्निबाण			
गुरुशिष्य			
शान्तचित्त			
मन्त्रबाण			
पुण्यभूमि			
नीलगाय			
माता-पिता			
रामलीला			
सीता-राम			
रुद्रवीणा			

पढ़िए और समझिए-

व्यक्ति का भाल, अब्दुल कलाम को, सफलता के लिए रामनाथपुरम में,

उपर्युक्त वाक्यांशों में संज्ञा शब्द के साथ सम्बन्ध सूचित करने वाले रेखांकित शब्द- 'का', 'को', के लिए, 'में'-प्रयुक्त हुए हैं।

ध्यान दीजिए -

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका सम्बन्ध सूचित हो, उसे कारक कहते हैं। अर्थात् कारक संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध जोड़ते हैं।

कारक के आठ भेद हैं। कारकों के विभक्ति चिह्न निम्नानुसार है -

क्र.	नाम कारक	कारक चिह्न/विभक्ति चिह्न
1.	कर्ता कारक	ने
2.	कर्म कारक	को
3.	करण कारक	से, द्वारा

4.	सम्प्रदान कारक	को, के लिए
5.	अपादान कारक	से (अलग होना)
6.	सम्बन्ध कारक	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
7.	अधिकरण कारक	में, पर
8.	सम्बोधन कारक	हे, रे, अरे आदि

5. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक के चिह्न पहचानकर उनके समक्ष लिखिए -

1. डॉ. अब्दुल कलाम को बच्चों से बहुत प्रेम है। जैसे- को, से
2. सफलता के लिए ऊँचे सपने भी देखने चाहिए। ....
3. डॉ.अब्दुलकलाम ने बचपन में बहुत संघर्ष किया। ....
4. तपस्वी व्यक्ति का भाल आभा से चमकता है। ....
5. डॉ.कलाम गुरु-शिष्य परम्परा के समर्थक थे। ....
6. हे ईश्वर! सबको सद्बुद्धि दो। ....
7. रामनाथपुरम की हाईस्कूल की दीवार पर अंकित था। ....
8. सभी को बुराई से बचना चाहिए। ....

योग्यता विस्तार

1. अग्नि के सफल प्रक्षेपण के बाद डॉ. ए.पी.जे.कलाम के स्वर मुखरित होकर कविता बन गये, उस कविता को याद कीजिए।
2. इस तरह की अन्य कविता बनाकर लिखिए।
3. अन्य वैज्ञानिकों के चित्र संग्रह कर कॉपियों में चिपकाइए।

विद्या का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए।